२ रु० दूसरी मिल में दिया जा रहा है । मैं कहना चाहता हूं कि जो इस तरह की डिस्पैरिटीज़ है उन के बारे में सरकार सफाई क्यों नहीं करती । उस का दिमाग साफ क्यों नहीं होता ।

श्री स्वर्ण सिंह : सरकार का दिमाग तो साफ है । दूसरे लोग भी जरा साफ करें । यह मैंने स्टेटमेंट में कहा है ।

श्री विश्राम प्रसाद (लालगंज) : अभी मंत्री जी ने बतलाया कि पर प्वाइंट ७ न० पै० रिकवरी पर चार्ज करने का कहा है । कभी कभी गन्ने में अक्तूबर में शुगर का परसेन्टेज कम होता है और फिर अप्रैल में कम हो जाया करता है । क्या इस पर गवर्नमेंट या मिल वाले विचार करेंगे । दूसरी बात यह कि कोई मिल कम एक्स्ट्रैक्शन करती है शुगर परसेन्टेज कम होने की वजह से या मशीनों के पुरानी होने की वजह से । इस का असर किसान पर क्यों पड़ना चाहिये । इस के लिये किसान को क्यों दोषी बनाया जाय । इस के असर को ध्यान में रक्खा जाय ।

श्री स्वर्ण सिंह : इस के मुताल्लिक मैं ने बहस के दौरान इस बात को साफ कर दिया था कि आप्टिमम प्रोडक्शन के ऊपर एवरेज निकाला जाता है । शुरू के वक्त में रिकवरी कम होती है और बाद में फिर इनवरशन की वजह से सुक्रोज कंटेंट कम हो जाता है । इस वक्त को इस हिसाब में नहीं लगाते । जब आप्टिमम रिकवरी होती है उस के ऊपर औसत निकाला जाता है ।

जहां तक दूसरे सवाल का संबंध है, यह ठीक है कि किसान को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए, लेकिन इस के लिए बड़ी भारी मैशिनरी आरगेनाइज़ करने की जरूरत होगी और लेबारेटरी वगैरह बनानी होंगी । इस पर भी विचार किया जा सकता है ।

श्री विश्राम प्रसाद : एक मिल में १ रु० ७५ नया पैसा दिया जाता है और दूसरी में दो रुपया दिया जाता है । एक में रिकवरी ज्यादा है और एक में कम है . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जाएं ।

13.00 hrs.

MOTION *RE* REPORT ON MID-TERM APPRAISAL OF THIRD FIVE YEAR PLAN—*contd.*

Mr. Speaker: We now take further consideration of the following motion moved by Shri Bali Ram Bhagat on the 5th December, 1963, namely:—

> "That the 'Report on the Mid-term Appraisal of the Third Five Year Plan', laid on the Table of the House on the 26th November, 1963, be taken into consideration."

श्री राधेलाल व्यास (उज्जैन) : अध्यक्ष महोदय, मेरी गुजारिश है कि इसमें और समय बढ़ा दिया जाये ।

अध्यक्ष महोदय : अब नहीं बढ़ाया जा सकता ।

श्री राधेलाल व्यास : कल डिप्टी स्पीकर महोदय ने पांच बजे से ६ बजे तक एक घंटे का समय बढ़ा दिया था, लेकिन दुर्भाग्य से साढ़े पांच बजे हाउस उठ गया । मेरी यह गुजारिश है कि कुछ क्षेत्र के लोगों को बोलने का समय नहीं मिला । मेरे राज्य के तीन अपोजीशन के मेम्बर हैं जिनको बोलने का समय नहीं मिला । इस लिये मेरा निवेदन है कि आधा घंटा समय बढ़ा दिया जाय । जो लोग कल हाउस उठने तक बैठे रहे थे उनको आज मौका मिलना चाहिये ।

अध्यक्ष महोदय : अब यह नहीं हो सकता ।

श्री कछवाय (देवास) : मैं कल पंचवर्षीय योजना के सम्बन्ध में अपने विचार रख रहा था । मैं यह कह देना चाहता हूं कि भारतीय जन संघ योजना का विरोधी नहीं है । योजना होनी चाहिये । हर घर में योजना बनायी

[श्री कछवाय]

जाती है । परन्त विचार करने की बात यह है कि यह योजना किस प्रकार की हो ।

13.02 hrs.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

हमें पिछला अनुभव है कि योजना के बाद देश में कितनी बेकारी बढ़ी है । योजना से उत्पादन बढ़ेगा, लेकिन अगर योजना के साथ साथ देश में बेकारी बढ़ेगी तो जनता उस उत्पादन का उपयोग कैसे कर सकेगी ।

बहुत सी मिलों के अन्दर नई नई मशीने लगायी गयी हैं, जिनके मंगाने के लिये हमारा पैसा बाहर गया है । यह ठीक है कि इन मशीनों के द्वारा उत्पादन बढ़ा, लेकिन इन मशीनों के कारण हजारों लाखों की तादाद में मजदूर बेरोजगार हो गये हैं । जब लोगों के पास पैसा नहीं होगा तो वे इन चीजों को कैसे खरीदेंगे । उनको काम मिलना बहुत जरूरी है क्योंकि जब तक उनको काम नहीं मिलेगा, उनके पास पैसा नहीं होगा, और जब उनके पास पैसा नहीं होगा तो वे देश में बनी हुई वस्तुओं को खरीद नहीं सकेंगे । इस बेकारी को दूर करने की कोशिश करनी चाहिये ।

सरकार को इस बात का अन्दाजा मिल चुका है कि देश में कितनी बेकारी है । इसका मैं एक उदाहरण आप के सामने रखना चाहता हूं । एक बार रेलवे विभाग में २०० आदमियों की जरूरत थी, सरकार ने समाचारपत्रों में छपवाया कि हमें दो सौ आदमियों की जरूरत है । उन दो सौ जगहों के लिये ६००० अर्जियां आयीं । इतना ही नहीं, जब फिर रेलवे विभाग में ४०० आदमियों की जरूरत पड़ी तो उन ४०० जगहों के लिये १४,००० अर्जियां आयीं । यह बेकारी का नमूना है । और यह वर्ग तो पढ़े लिखे आदमियों का है । अगर सरकार सारे राज्यों में इस प्रकार की घोषणायें करके जांच करे तो उसको पता चले कि पढ़े लिखे लोग कितने बेकार हैं ।

इसके अलावा सरकार ने इस विषय पर विचार नहीं किया है कि किसानों में जो अनपढ़ लोग हैं उनमें कितने बेकार हैं । उनमें भी हजारों और लाखों की तादाद में लोग बेकार हैं । यह बेकारी दूर कैसे हो ? काश्तकारों में यह बेकारी क्यों बढ़ रही है ? शासन द्वारा नए ढंग की मशीने खेती के लिये लगायी जा रही है और इस कारण हमारे मजदूर बेकार हो जाते हैं और वे धर्म संकट में पड़ जाते हैं कि क्या करें । इनमें से अनेक लोग काम न मिलने के कारण पाइजन खा कर आत्म हत्या कर लेते हैं । स्वर्णकारों ने भी ऐसा किया था, पर सरकार उनके सही आंकड़े नहीं दे सकी कि कितने स्वर्णकारों ने आत्म हत्या की ।

देश की राजधानी दिल्ली में हम देखते हैं कि डलिया ढोने वाले लोग ८ या ६ हजार की संख्या में रोज फुटपाथों पर सोते हैं, उनके पास बिछाने को टाट होता है और ओढ़ने को भी टाट ही होता है । यह राजधानी और देश के लिये कितने कलंक की बात है ।

आप जो ट्रैक्टरों और मशीनों से खेती कराते हैं इससे बहुत से मजदूर बेकार हो जाते हैं । आपको देहातों में छोटे छोटे उद्योग लगाने चाहिये जिनसे ज्यादा लोगों को काम मिल सके । इससे देश में उत्पादन भी बढ़ेगा और बेकारी भी कम होगी ।

इसके अलावा मैं बढ़ी हुई कीमतों के बारे में बड़े जोरदार शब्दों में कहना चाहता हूं । आप कहते हैं कि हमने मजदूरों की मजदूरी बढ़ा दी, लेकिन दूसरी ओर कीमतें इतनी बढ़ गयी हैं कि मजदूर अपनी रोजाना की जरूरत की चीजें नहीं खरीद सकता । आपने एक मजदूर की तनखाह ३० रुपये से ४० रुपये कर दी, दस रुपये बढ़ा दिये, लेकिन दूसरी तरफ जिस चीज का दाम चार आना था वह चीज आज सवा रुपये और डेढ़ रुपये में मिल रही है ।

एक माननीय सदस्य : गेहूं का क्या भाव है ?

श्री कछवाय : मैंने एक रुपया के बीस सेर गेहूं खाया है, लेकिन आज आटा सवा सेर या डढ़ सेर का मिलता है । तो एक ओर तो आप मजदूर की तनख्वाह बढ़ाते हैं लेकिन दूसरी ओर योजना को सफल करने के लिये करों को इतना बढ़ा देते हैं कि जिससे मंहगाई बढ़ती जाती है । सरकार ने इस पर विचार नहीं किया है । सरकार तो योजना के कागजी घोड़ों पर चल रही है ।

मैं उस गरीब इलाके से आता हूं जहां कि लोग पेड़ों के पत्तों पर और गोबर से निकाले हुए अन्न पर अपनी जिन्दगी बिताते हैं । इसकी जानकारी सरकार को होनी चाहिये । सरकार को निजी रूप से यह जानकारी नहीं है, केवल हम विरोधी दल के लोग उन को यह बात कहते हैं । शासन को आज इस बात की ठीक जानकारी नहीं है कि लोग देश में किस प्रकार भूखे मर रहे हैं । मेरा तो निवेदन है कि मंत्री महोदय मेरे साथ खुफिया तौर पर चल कर देखें तो उनको सही स्थिति का पता चल सकता है ।

आज सरकार ने खादी ग्रामउद्योग, भारत साधु समाज, मछली पालन, मक्खी पालन, मुर्गी-पालन आदि अनेक काम खोल रखे हैं जिनमें कांग्रेसी लोग राजकुमारों की तरह काम करते हैं । मैं अपनी भाषा में उनको राजकुमार ही कहता हूं । इन संस्थाओं में काम करने वाले लोग राजकुमारों का सा जीवन बिताते हैं । उन्हें पता नहीं है कि देश की हालत क्या है । इस योजना से जनता को क्या लाभ हुआ है इसका पता मंत्री महोदय को तभी लग सकता है जब कि खुफिया तौर पर नीचे के तबके की अवस्था को जा कर देखें । ऐसा करने से उनको मालूम होगा कि जनता का इस योजना के बारे में क्या विचार है और जनता इस योजना को क्या समझती है ।

अब मैं मंत्री महोदय का ध्यान सहकारी खेती की ओर दिलाना चाहता हूं । सहकारी खेती की योजना के कारण आज देश के किसानों में यह भावना फैली हुई है कि सरकार हमारी जमीन ले कर खुद उस पर खेती करेगी । लोग ऐसा सोचते हैं कि सरकार जब जमीन ले ही लेगी तो हम क्यों दिलचस्पी के साथ उत्पादन बढ़ायें ? हम इतनी मेहनत के साथ क्यों काम करें, हमें करना भी क्या है क्योंकि जमीन तो हमारी सरकार ने ले ही लेनी है और हमें तो जीवन भर गुलाम ही बने रहना है । हम सरकार के नौकर होंगे । उन के मन में इस तरह की एक धारणा बन गई है । सहकारी खेती के नाम पर और भूमि सुधार के नाम पर आप यह करने जा रहे हैं कि जिनके पास ४० बीघे के ऊपर जमीन होगी उस की जमीन सरकार ले लेगी । आप सोशलिज्म और समाजवाद का नारा बुलंद करते थकते नहीं लेकिन एक व्यक्ति जिसके पास चार आठ मकान, एक, दो या दस कारखाने हैं, काफी अचल सम्पत्ति का वह मालिक बना बैठा है लेकिन उसकी वह सम्पत्ति आप छीनना नहीं चाहते । पूंजीपतियों पर आपकी विशेष कृपा रहती है । इस का मुख्य कारण यह है कि यह कांग्रेस सरकार उन्हीं पूंजीपतियों, फैक्टरीज़ के मालिकों और कम्पनियों के मालिकों से चंदे आदि की शकल में मोटी मोटी रकमें पाती है और उन की सहायता व सहयोग के आधार पर ही यह कांग्रेसी लोग बारबार संसद तथा अन्य विधान मंडलों में चुन कर आते हैं । पिछली बार स्वयं भूतपूर्व मंत्री श्री केशव देव मालवीय ने यह बात स्वीकार की थी कि उन्होंने जो १० हजार रुपया एक बड़ी प्रइवेट फर्म से लिया था वह उन्होंने चुनाव लड़ने के लिये लिया था । यह बात अब बिलकुल साफ हो गई है कि इन बड़ी बड़ी कम्पनियों के द्वारा यह हमारे कांग्रेसी राजकुमार पलते हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य अपना भाषण समाप्त करें । उनका समय समाप्त हो रहा है ।

श्री कछवाय : मै सदन का और अधिक समय न लेते हुए केवल शिक्षा के सम्बन्ध में थोड़ा सा अवश्य निवेदन करना चाहूंगा । शिक्षा के क्षेत्र में हम देखते हैं कि उसके स्तर में निरन्तर ह्रास हो रहा है । उसका स्तर दिनोदिन बढ़ने के बजाय उलटे घटता ही जा रहा है ।

शिक्षा का स्तर जहां गिरता जा रहा है वहां साथ ही उनमें अनुशासनहीनता भी बढ़ने लगी है साथ ही उनका चारित्रिक अधपतन भी हो रहा है । अनुशासनहीनता विद्यार्थियों में बहुत बढ़ रही है और उसके अनेकों केस आये दिन समाचारपत्रों में पढ़ने और सुनने को मिलते हैं । मैं इस का एक उदाहरण देना चाहता हूं । विद्यार्थियों की कुछ मांगें थीं । उन मांगों को लेकर वे प्रिंसिपल के पास गये । जब प्रिंसिपल ने उनकी बात नहीं सुनी और उनकी मांगों को स्वीकार नहीं किया तो विद्यार्थियों ने विरोध में उन का एक पुतला बनाया और जलूस बना कर प्रिंसिपल के घर के सामने पहुंचे और उस प्रिंसिपल के पुतले को वहां पर रख कर उन्होंने जला दिया । अब इस से स्वयं माननीय सदस्य अंदाज लगा सकते हैं कि विद्यार्थियों का स्टैन्डर्ड घटा है अथवा बढ़ा है । अनुशासन का उनमें नितांत अभाव दिखाई देता है । जब प्रिंसिपल की पत्नी ने इस बारे में बाहर खड़े हुए लोगों से पूछा कि यह नारे और शोर शराबा किस लिये है तो उन्होंने बतलाया कि ताज्जुब है आपको अभी तक पता नहीं लग पाया । आप के पति महाशय स्वर्ग सिधार गए हैं, उनका हमने दाह संस्कार कर दिया है । आप अब शौक से दूसरा पति कर लें । बी० ए० पास विद्यार्थियों में शिक्षा का यह असर पड़ रहा है । वे दिन पर दिन अनुशासनहीनता व उच्छश्रंखल होते जा रहे हैं ।

विद्यार्थियों में चारित्रिक अधपतन कितना हो रहा है मैं इस बारे में ज्यादा नहीं कहना चाहता क्योंकि अख़बारों में आये दिन उनमें कितनी गिरावट आ गई है इसके समाचार छपते रहते हैं । कालिजों और विश्वविद्यालयों की ऐसी बहुत सी घटनायें सुनने की मिलती हैं कि कुवारी छात्रा ने एक बालक को जन्म दे दिया । अभी समाचार पत्र में इस आशय की एक ख़बर छपी थी कि मथुरा के अन्दर एक कुमारी अध्यापिका ने एक बालक को जन्म दिया । उसने लोकलज्जावश उस बालक को मार दिया जिसको बाद में गिरफ्तार कर लिया गया । इस तरह हम देखते हैं कि हमारे छात्रों का चरित्र दुर्बल होता जा रहा है ।

जहां तक देश के स्वास्थ्य का सम्बन्ध ह, मेरा कहना है कि लोगों का स्वास्थ्य खराब होता जा रहा है और हमारे नवयुवक और नवयुवतियों का स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता जा रहा ह ।

परिवार नियोजन के लिये ४० करोड़ रुपया खर्च करने वाले हैं । लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि इस सरकार को आयुर्वेद और यूनानी जो कि प्रचलित पुरानी देशी चिकित्सा पद्धतियां हैं, उनके प्रति उपेक्षा की नीति अब त्याग देनी चाहिए । सरकार का ऐसा सोचना कि एलोपैथिक दवाइयों और इंजेक्शनों से वे लोगों का स्वास्थ्य अच्छा कर सकेंगे, यह ख़याल छोड़ देना चाहिये । उसको आयुर्वेद को प्रोत्साहन देना चाहियें । उसमें नवीनतम अनुसंधान कराने चाहिये और देशवासियों को सस्ता इलाज सुलभ करना चाहिये । आपने मुझे समय दिया इसके लिये धन्यवाद ।

Mr. Deputy-Speaker: Now, Shri Radhelal Vyas.

Shri Radhelal Vyas (Ujjain) *rose*—

श्री रामसेवक यादव : (बाराबंकी) : उपाध्यक्ष महोदय, इस समय सदन में जो

कार्यवाही चल रही है वह केवल २०-२२ सदस्यों की उपस्थिति में चल रही है । यह तो ठीक है कि हमने एक इस तरह की परम्परा डाल रखी है कि एक और ढाई बजे की बीच में कोरम का सवाल नहीं उठाया जायेगा, लेकिन यह भी देखने की चीज है कि लोक-सभा जो कि इस देश की सर्वोच्च लोकतंत्री संस्था है, उसकी कार्यवाही केवल २० या २२ सदस्यों की मौजूदगी में चलती रहे । आखिर इस चर्चा का मतलब क्या होगा ? इस बहस को कौन सुनेगा और कौन उस पर राय देगा । कांग्रेस वालों को ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी कोई परवाह नहीं रह गयी है । उनको तो अपनी मीटिंग चलाने से मतलब है और चूंकि इस समय वह मीटिंग अन्यत्र इसी बिल्डिंग में चल रही है इसीलिए उनकी उपस्थिति इतनी कम है ।

Mr. Deputy-Speaker: Is the hon. Member challenging the quorum?

Shri Ram Sewak Yadav: Yes.

Mr. Deputy-Speaker: Let the bell be rung—

Shri Radhelal Vyas: There is a convention that between 1 P.M. and 2.30 P.M. no question of quorum will be raised.

Mr. Deputy-Speaker: The other day, the Speaker had made it clear that when the question of quorum was raised, the bell should be rung.

Shri S. M. Banerjee: Even after the convention?

Shri M. R. Masani (Rajkot): The convention should be respected.

Shri S. M. Banerjee: The convention is that during lunch hour, the question of quorum should not be raised.

Shri M. R. Masani: Let the convention be respected.

श्री कछवाय : इस समय हाउस में कोरम नहीं मालूम पड़ता है । ७ कांग्रेसी और १४ विरोधी दल के लोग मौजूद हैं ।

श्री रामसेवक यादव : उपाध्यक्ष महोदय, अगर ऐसा ही है तो एक से ढाई बजे तक लंच आवर डिक्लेयर कर दिया जाय । अब इससे तो शीशे के सामने अकेले खड़े होकर बोलना ज्यादा अच्छा होगा ।

Mr. Deputy-Speaker: If the hon. Members observe the convention, I can help it, but if they raise an objection, I cannot help it.

Shri M. R. Masani: The convention should be observed.

Shri Warior: May I know whether the time will be extended for this discussion?

Mr. Deputy-Speaker: There will be no further extension?

Shri Warior: When will the hon. Minister be called?

Mr. Deputy-Speaker: Immediately after Shri Radhelal Vyas.

Shri Warior: There is an important meeting of the Congress Party going on now.

Mr. Deputy-Speaker: I am not concerned with the Congress Party meeting, as Deputy-Speaker. The hon. Member is also not concerned with it.

श्री काशी राम गुप्त : उपाध्यक्ष महोदय, कांग्रेस पार्टी मीटिंग इस प्रकार से एक बजे की जाय यह कहां तक उचित है ?

Mr. Deputy-Speaker: As Deputy-Speaker, I am not concerned with what the Congress Party does or does not do.

Shri Kashi Ram Gupta: But that meeting is being held in the precincts of the Parliament House.

Mr. Deputy-Speaker: I do not know.

श्री रामसेवक यादव : चूंकि कोरम नहीं है इसलिए मेरा सुझाव है कि सदन को स्थगित कर दिया जाय ।

श्री ब्रजराज सिंह : श्री रामसेवक यादव के इस सुझाव से कि सदन को स्थगित कर दिया जाय, मैं सहमत हूं ।

Mr. Deputy-Speaker: The bell is being rung.

Some Hon. Members *rose*—

Mr. Deputy-Speaker: Hon. Members may resume their seats. There is no quorum, and therefore there is no House. Therefore they cannot speak now.

There is no quorum. So the House will stand adjourned till 2 P. M.

13.18 hrs.

The Lok Sabha re-assembled at Fourteen of the Clock.*

15 hrs.

The Lok Sabha re-Assembled at fifteen of the Clock.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

RE QUORUM

Mr. Deputy-Speaker: Shri Radhelal Vyas.

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshangabad): Before we begin, may I raise a point? It was, if I remember aright, the first Speaker of free India's Parliament, Shri Mavalankar, who ruled more than once that the work of Parliament should take precedence with Members of Parliament and even if there was a sitting of some party or any committee during the hours of sitting of the House, Members should give precedence to the work of Parliament and not to the extraneous committee or party meeting. Here, because of some reasons—I do not know what the reasons were—because of a party's meeting so I am told—two precious hours of parliamentary time have been wasted—by a meeting called by the Members on the other side. It is wholly improper, wholly irregular and wholly detrimental to the growth of parliamentary democracy that this kind of party meeting should get precedence over parliamentary work.

Shri Tyagi (Dehra Dun): There was an old standing convention and practice in this House that during the lunch hour, quorum was never challenged. What has happened today is surprising. We were all under the impression that between 1 and 2 quorum was never challenged. It is surprising that the Opposition gives up all those conventions and challenges the quorum in this manner.

श्री रामसेवक यादव : (बाराबंकी) : अभी माननीय त्यागी जी ने एक प्रश्न उठाया है । उसके बारे में मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जो कायदे कानून हैं, उनको कोई परम्परायें जो हैं, वे तोड़ नहीं सकती हैं । दूसरी बात यह कि हम लोगों ने पूरी कोशिश की कि रहें, इसलिए कि यह सवाल ही न उठे । लेकिन हालत यह थी कि हम तो चौदह थे और त्यागी जी के सहयोगी सात । ऐसी हालत में दीवार से बात करने से क्या फायदा हो सकता था । ऐसे वक्त यह सवाल न उठाया जाय तो कैसे काम चलेगा ?

Shrimati Yashoda Reddy (Kurnool): Just as it is the duty of the Congress Members to maintain quorum, it is equally the duty of the Members on the other side also to maintain it.

श्री रामसेवक यादव : हम ज्यादा थे ये कम । इससे हमारी जिम्मेदारी का पता चलता है ।

Shrimati Yashoda Reddy: First of all, between 1 and 2.30, there was a sort of convention that the quorum

---

*At 14-00 hours quorum bell was rung. No quorum was made, and at 14-03 hours, quorum bell was rung again and no quorum was made. The Secretary informed the Members present as follows:—

"There is no quorum. So the House cannot meet. We cannot start the House till there is quorum. The Deputy-Speaker has directed that the House will meet at 3 P.M."